MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Issue-58, Vol-13, April To June 2026

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

INDEX

01) STUDY OF 'VIKSIT BHARAT 2047' AND ITS IMPACT ON INDIAN INDUSTRIES
Dr. Geetamma K., Vijayanagar, Karnataka, India ||10

02) Personality Traits and Teaching Styles Among General and Special Educators
Shrey Khatak, (Sirohi) ||13

03) POCSO Act and Technology-Based Child Sexual Abuse: A Legal Analysis
Sunny Kumar, Dr. Suneeta Bhadoo, Sriganganagar (Raj.) ||19

04) Tracing the Positive Transformation of Classical Arts into a Universal Language
Vaibhavi Rajhans, Dr. Preeti Sathe Damle, Baroda ||23

05) Cultural Diversity In Music Education
Dr. Vishal Vijay Korde, Akola ||27

06) Machine Learning-Based Detection and Prevention of DDoS Attacks
Yash Bhatnagar, Ms. Bhawna Sharma, Gurugram, Haryana ||29

07) प्राचीन भारतातील कला आणि स्थापत्याचे ऐतिहासिक विश्लेषण(अजिंठा, वेरूळ ...
डॉ. विनोद गौतम सोमकुवर, नंदुरबार ||33

08) प्रेमचंद की युग चेतना
डॉक्टर खुशबू सिंह, सीतापुर, उत्तर प्रदेश ||37

09) साइबर युद्ध के युग में परंपरागत संचार माध्यमों की प्रासंगिकता: नुक्कड़—नाटक ...
सुनील कुमार मिश्रा, अर्चना कटोच, रवि कुमार गोंड़ ||41

10) डिजिटल भूमंडलीकरण: २१वीं सदी के विकासशील देशों पर एक विश्लेषणात्मक प्रभाव
ओम प्रकाश, पाली राजस्थान ||52

11) ताना भगत आंदोलन/विद्रोह (१९१४—१९४७)
डॉ. प्रकाश केरकेट्टा, हजारीबाग, झारखण्ड ||55

12) बबसमाजशास्त्र में मूल्य : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण
डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र, महराजगंज, (उ.प्र.) ||60

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

08

प्रेमचंद की युग चेतना

डॉक्टर खुशबू सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी),
हिंदू कन्या महाविद्यालय सीतापुर, उत्तर प्रदेश

****

हिंदी साहित्य जगत के दैदीप्यमान सितारा मुंशी प्रेमचंद भारतीय समाज के लिए सदैव ही प्रासंगिक रहे हैं और भविष्य में भी उनकी प्रासंगिकता और भी बढ़ती ही जाएगी। इसका कारण है हमारा समाज आगे बढ़ने के बदले पीछे ही जा रहा है। जिस पिछड़ेपन एवं अत्याचार के विरुद्ध मुंशी प्रेमचंद ने संघर्ष किया था, वह समस्या आज भी हमारे समाज में ज्यों का त्यों बनी हुई है। आर्थिक स्तर पर देश भले ही विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया हो, परंतु जन सामान्य में गरीबी एवं भुखमरी की स्थिति आज भी बनी हुई है। राजनीतिक स्तर पर भी देश के विभाजन की समस्या और तीव्र हो गई है। राजनीतिक पार्टियाँ देश हित के अलावा अपना हित साधने के साधक बने हुए हैं। सांस्कृतिक स्तर पर भी ऊँच– नीच का भेद, हिंदू– मुस्लिम का भेद और ही बढ़ा है।

वर्तमान समय की इन परिस्थितियों को समझने में प्रेमचंद का साहित्य अधिक सहायक है। उनका साहित्य आज के भारत का अद्वितीय ऐतिहासिक दस्तावेज मालूम पड़ता है। इस संबंध में रामविलास शर्मा का कहना है, समाज गतिहीन नहीं है। उसकी गति आगे की ओर हो सकती है, पीछे की ओर भी। इस समय वह पीछे की ओर है। कारण यह है कि समाज को पीछे ठेलने वाली जिन शक्तियों से प्रेमचंद लड़े थे, उनसे समाज के प्रभावशाली गिरोहों ने समझौता किया है, उन्हें बढ़ावा दिया है।१ जिन्हें समाज में बदलाव लाने की जिम्मेदारी दी गई, वही इस समाज को सर्वाधिक विकृत कर रहे हैं। यथार्थवादी रचनाकार प्रेमचंद जी ने इसका चित्रण अपनी रचनाओं में बेबाकी पूर्वक किया है।

प्रेमचंद का साहित्य तात्कालिक भारत और उसके स्वाधीनता–आंदोलन का प्रतिबिंब है। उसमें उसे समय के सामाजिक जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन की विसंगतियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। सोवियत आलोचक ब्रेस्क्रोव्नी के शब्दों में, प्रेमचंद यह नहीं देखते कि मजदूर– वर्ग वह अकेली शक्ति है जो कष्ट पाती हुई किसान जनता को मुक्त कर सकती है। तो भी इतना जरूरी है कि जब वे किसान– परिवारों के टूटने को चित्रित करते हैं और दिखलाते हैं कि आर्थिक शक्तियाँ किस प्रकार उनको सहानुभूति–शून्य नगरों में जाने के लिए बाध्य करती हैं, उस समय लेखक मजदूर– वर्ग से हमदर्दी प्रकट करता है, क्योंकि वह मजदूर– वर्ग में गरीबी और मजदूरी का रास्ता पकड़ने के लिए मजबूर किसान को ही देखता है।२

प्रेमचंद ने भारत के राष्ट्रीय और जनवादी साहित्य को नया आयाम दिया। उन्होंने अपनी लेखनी से विशाल मानव– संस्कृति को भारतीय जन– संस्कृति से परिचित कराया। जब सम्पूर्ण विश्व दो महायुद्धों का दंश झेल रहा था, उस समय प्रेमचंद ने भारतीय जनता को अपने पथ पर अग्रसर किया। उन्हें तमाम कठिनाइयों से, समस्याओं से लड़ने का हौसला प्रदान किया। प्रेमचंद भारतीय जनता से कहते हैं, यह अंत नहीं है., और आगे बढ़ो और आगे बढ़ो जब तक कि रंगभूमि में विजय न हो, जब तक कि देश का कायाकल्प न हो, जब तक कि इस कर्मभूमि में गबन और गोदान के होरी और रमानाथ का त्रस्त होना बंद न हो और हमारा देश एक नई तरह का सेवासदन, एक नई तरह का प्रेमाश्रय न बन जाए।३ प्रेमचंद मानव– आत्मा के शिल्पी हैं, इसका कारण यह है कि वह आत्मा अखंड, अभेद्य और अनादि न होकर किन्हीं देश काल की परिस्थितियों में दुख–सुख पाती है।

प्रेमचंद मानवतावादी विचारक हैं। उनका मानववाद मनुष्य की तरफदारी करने वाला मानववाद है। वह अमानुषिक कृत्यों को देखकर चुप नहीं रहते। उनका मानना है कि ऐसी भावनाओं के प्रति जितनी भी घृणा की जाय वह कम है। उनका साहित्य उद्देश्यपूर्ण है। कला कला के लिए या निरुद्देश्य साहित्य से

उनका बैर है। भले ही प्रेमचंद सोद्देश्य साहित्य के हिमायती थे, परंतु हर तरह के उद्देश्य को उन्होंने नकारा भी है। जैसे कि उन्होंने सन् ३० में विशाल भारत में घोषित किया था, मेरी अभिलाषां बहुत सीमित हैं। इस समय सबसे बड़ी अभिलाषा यही है कि हम अपने स्वतंत्रता— संग्राम में सफल हों। मैं दौलत और शोहरत का इच्छुक नहीं हूँ। खाने को मिल जाता है। मोटर और बँगले की मुझे हविस नहीं है। हॉ, यह जरूर चाहता हूँ कि दो—चार उच्च कोटि की रचनां छोड़ जाऊँ., लेकिन उनका उद्देश्य भी स्वतंत्रता —प्राप्ति ही हो।४ प्रेमचंद ने अपने समय की परिस्थितियों को जिया और उसे अपने साहित्य में स्थान दिया। यही कारण है कि उनका साहित्य इतना सशक्त और प्रभावशाली है।

प्रेमचंद इस बात के समर्थक भी नहीं थे कि मनुष्य जो कुछ भी अनुभव करे उस पर लिखे। साहित्य में अनुभूति की दुहाई देना दूसरे शब्दों में निरुद्देश्यता की घोषणा करना है। कविता निरुद्देश्य होती है कि सोद्देश्य इस बात का जवाब देते हुए ३६ के हंस में प्रेमचंद ने लिखा था, इसलिए यह कहना कि कविता का कुछ उद्देश्य ही नहीं होता और उसको उपयोगिता के बंधन में बाँधना गलती है, एक सारहीन बात है।५ कवि किसी को अपने विचारों से कैसे प्रभावित करता है कि पाठक कभी रोने लगता है तो कभी हसने लगता है इस बात का जवाब देते हुए उन्होंने उसी टिप्पणी में लिखा था, उसका उद्देश्य है, हमारी करुणा भावनाओं को उत्तेजित करना, हमारी मानवता को जगाना और यही उसकी उपयोगिता है., मगर हम तो कवि की सभी अनुभूतियों के कायल नहीं। अगर उसने अपनी प्रेयसी के नख— सिख बखान में वाणी का चमत्कार दिखाया है, तो हम देखेंगे कि उसने किन भागों से प्रेरित होकर यह रचना की है। अगर उससे हमारे मनोभावों का परिष्कार होता है, इसमें सौंदर्य की भावना सजग होती है, तो उसकी रचना ठीक, वरना गलत।६

प्रेमचंद के यह विचार वर्तमान समय में भी नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर रहा है। उनका महत्व जितना सन् ३५ में था, उससे कहीं ज्यादा आज है। एक सच्चे युगद्रष्टा की यही पहचान होती है कि उसकी प्रासंगिकता सदैव ही बनी रहती है। नये रचनाकारों को उन्होंने सजग किया है। इसका कारण है, अपने सामाजिक उत्तरदायित्व से बचने के लिए कई बुद्धिजीवी तरह—तरह के अनगढ़ तर्क पेश करते हैं। कोई कहता है, सामाजिक उद्देश्य से साहित्य को बाँध देना उसकी चिरंतन प्रगतिशीलता को खत्म कर देना है। कोई कहता है, साहित्यकार को सच्ची अनुभूति के अनुसार लिखना चाहिए, उद्देश्य की चिंता छोड़ देनी चाहिए। परंतु प्रेमचंद अपने दृढ़ विश्वास पर अडिग रहते हुए कहा, ष्मगर हम तो कवि की सभी अनुभूतियों के कायल नहीं।७ एक सच्चे युग निर्माता की यही पहचान होती है कि वह सभी प्रकार के रूढ़ियों और मनगढ़ंत विचारों से दूर रहे न कि उनकी हॉं में हॉं मिलाए।

प्रेमचंद ने सौंदर्य की भावना के प्रति भी सजग होने की बात भी कही। यह सौंदर्य की भावना वही है जिसके नाम पर कुछ साहित्यकार अपने सामाजिक उद्देश्य से भागना चाहते हैं। युग निर्माता प्रेमचंद ने ऐसे साहित्यकार को सजग किया। उनके साहित्य में सौंदर्य का इतना व्यापक वर्णन नहीं मिलता, जो उच्च वर्गों का मनोरंजन करने वाला, जनता को बरगलाने वाला तथा काम— साहित्य को भी समेटे हुआ हो। सौंदर्य की भावना से सजक करने से उनका मतलब दिमागी ऐयाशी और रीतिकालीन नायिका भेद से नहीं होता। वे इस तरह के सौंदर्य— साहित्य के पुरजोर विरोधी थे। उनका तात्पर्य सौंदर्य की उस भावना से है, जो जनसाधारण के हृदय में है, जिसके सजग होने पर मनुष्य पराधीनता के घिनौनेपन को पहचान लेता है और उसे दूर करने के लिए युद्ध करता है।

प्रगतिशील विचारक प्रेमचंद को यह अनुभव हो गया था कि यदि व्यक्ति स्वयं अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं होगा तो उसका शोषण सदैव होता रहेगा। वे महाजनी सभ्यता, साम्राज्यवाद, पूँजीवाद का विरोध करते रहे तथा उसका यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं में भी किया। महाजनी सभ्यता में मनुष्यता को व्यापार और मुनाफे की वेदी पर किस तरह कुर्बान किया जाता है, इसकी मार्मिक व्याख्या में दुनिया के

मनुष्य समाज को दो हिस्सों में बाँटा गया है, ष्बड़ा हिस्सा तो मरने और खपनेवालों का है, और बहुत ही छोटा हिस्सा उन लोगों का है जो अपनी शक्ति और प्रभाव से बड़े समुदाय को अपने बस में किए हुए है। उन्हें इस बड़े भाग के साथ किसी तरह की हमदर्दी नहीं, जरा— भी रू—रियायत नहीं। उसका अस्तित्व केवल इसलिए है कि अपने मालिकों के लिए पसीना बहाए, खून गिराए और एक दिन चुपचाप इस दुनिया से विदा हो जाए।८ समाज का ऐसा यथार्थ चित्रण प्रेमचंद जैसा महान रचनाकार ही कर सकता है। समाज के शक्तिशाली एवं प्रभुत्व संपन्न लोगों की मंशा एवं कारनामों का उन्होंने खुलकर विरोध किया है।

प्रेमचंद का झुकाव शुरू से ही यथार्थ जीवन की तरफ था। उनकी रचनां इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। जिसमें ज्यादा से ज्यादा यथार्थवादी चित्रण गहराई से देखने को मिलती है। जीवन में साहित्य का स्थान नामक लेख में उनका पहला ही वाक्य है, साहित्य का आधार जीवन है। यही कारण है कि उनकी रचनां जीवन की महागाथा के रूप में हमारे सामने हैं। उनका मानना भी है, साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है, तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है। उसकी विशाल आत्मा अपने देश— बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है, पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है।९

प्रेमचंद प्रारंभ से ही गांधीवादी सिद्धांत और आचरण के अनुयायी रहे हैं। यही कारण रहा है कि वे अपनी रचनाओं में यथार्थवाद को अपर्याप्त मान कर टिप्पणी भी करते हैं। उनका कथा—साहित्य के संबंध में कहना है, उसमें कल्पना की मात्रा कम, अनुभूतियों की मात्रा अधिक होती है, बल्कि अनुभूतियाँ ही रचनाशील भावना से अनुरंजित होकर कहानी बन जाती है, यह समझना भूल होगी कि कहानी जीवन का यथार्थ चित्रण है१० उनका यह मानना था कि यथार्थवाद को यथा तथ्यता और प्रकृतिवाद से अलग करके नहीं देखा जा सकता। यहाँ रचनाकार यथार्थ का हू—ब—हू वर्णन करता है तो उसमें कला कहाँ है। कला केवल यथार्थ की नकल का ही नाम नहीं है। उसकी यही विशेषता होती है कि वह जैसी दिखती है, वैसी होती नही। उसका मापदंड जीवन के मापदंड से अलग है।

प्रेमचंद जैसे साहित्य— स्रष्टा ही दूसरों में भी साहित्य — रचना की प्रेरणा पैदा करने की ललक जगा सकते हैं। उनके विचार नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करते हैं। उनका महत्व जितना तात्कालीन समय में था, उससे कहीं ज्यादा वर्तमान में है। प्रेमचंद बहुत — सी झंझावातों को झेलते हुए भी क्रांतिकारी यथार्थवाद की तरफ रुख किया। एक ऐसे यथार्थवाद की तरफ जो जीवन का सही चित्र देते हुए पाठक में अपने जीवन की परिस्थितियों को बदलने की, एक नया जनवादी और स्वाधीन जीवन निर्माण करने की प्रेरणा भी दे। उनका मानना था, मानव— संस्कृति का विकास ही इसलिए हुआ है कि मनुष्य अपने को समझे। आध्यात्म और दर्शन की भांति साहित्य भी इसी सत्य की खोज में लगा हुआ है — अंतर इतना ही है कि वह इस उद्योग में रस का मिश्रण करके उसे आनंदप्रद बना देता है, इसलिए आध्यात्म और दर्शन केवल ज्ञानियों के लिए हैं, साहित्य मनुष्य — मात्र के लिए।११ साहित्य जन सामान्य को प्रभावित करता है। वह आम जन की भाषा होती है।

मनुष्य को यदि अपना विकास करना है तो उसे अपने आत्म को समझना होगा। मनुष्य आत्मज्ञानी बने यह धारणा इस अर्थ में सत्य नहीं है कि मनुष्य में अखंड सत्य छुपा हुआ है और उसे केवल समझना ही शेष रह गया है। मनुष्य का आत्मज्ञानी होना उसके भौतिक विकास के साथ जुड़ा हुआ है। इस विकास के क्रम में मनुष्य सिर्फ आत्मज्ञानी ही नहीं बनता, अपितु अपने स्वरूप में परिवर्तन भी करता है। इस संबंध में प्रेमचंद जी का कहना था, कितने ही सिद्धांत जो एक जमाने में सत्य समझ जाते थे, आज असत्य सिद्ध हो गए हैं, पर कथाएं आज भी उतनी ही सत्य हैं, क्योंकि उनका संबंध मनोभावों से है और मनोभावों में कभी परिवर्तन नहीं होगा।१२ परंतु समय — समय के साथ लोगों के संस्कार भी परिवर्तित होते रहते हैं। इसलिए यह कहना कि मनोभाव परिवर्तित नहीं होते पूर्णतः

सत्य नहीं है।

प्रेमचंद अपने युग की नवीन चेतना से प्रभावित थे, वे स्वयं उसके निर्माता थे। अपने दूरदर्शी व्यक्तित्व से वे वर्तमान और भविष्य दोनों को ज्यादा स्पष्टता से दिखते थे। उन्हें भले ही प्राचीन संयुक्त परिवार से मोह था, परंतु इस मोह के बावजूद वे प्राचीन परिवार — प्रथा के दोषों का सजीव चित्रण भी किया हैं। प्रेमचंद के कला की गहरी जड़ें इस पारिवारिक परिवेश में है। प्रेमचंद में यह अंतर्विरोध साफ झलकता है। इस संबंध में रामविलास शर्मा का मानना है, हर आदमी में अंतर्विरोध होते हैं। अंतर्विरोध न हों तो उसका व्यक्तित्व गतिशील न होकर स्थिर और जड़ हो जाए। जब अंतर्विरोध एक हद तक संतुलित रहते हैं तब वे गतिशीलता प्रदान करते हैंय जब उनका असंतुलन सीमा पार कर जाता है, तब व्यक्तित्व भीतर से टूट जाता है[१३] प्रेमचंद की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की झलक साफ दिखाई पड़ती है। उन्होंने सदैव नवीन प्रयोग किया और अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य के उद्देश्य को पूर्ण किया।

प्रेमचंद ने साहित्य की बड़ी ही सुंदर व्याख्या की है, साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सचाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो। और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप में उसी अवस्था में उत्पन्न होती है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हो[१४] इस प्रकार प्रेमचंद जो अनुभव करते हैं, उसको अपनी रचनाओं में दिखाते भी हैं। जो एक सच्चे एवं प्रगतिशील साहित्यकार की पहचान भी है।

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस समस्या का समाधान कर दिया है कि साहित्य का संबंध किसी चिरंतन आनंद और सुंदरता से है या युग की परिस्थितियों से। अगर साहित्यकार कला कला के लिए का सिद्धांत अपनाता तो वह देश की दयनीय स्थिति से विकल नहीं होता। वह स्वदेश का होकर ही सार्वभौमिक होता है। प्रेमचंद की रचनां स्वयं इस सत्य की मिसाल हैं। वे स्वदेशीपन में डूबी हुई है., उनका रचयिता अपने देश— बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठता है। यही कारण है कि वे युग निर्माता के रूप में पहचाने जाते हैं। उनका साहित्य राष्ट्रीय और जातीय उत्थान का साहित्य बन गया है। प्रेमचंद की आवाज भारत की अजेय जनता की आवाज है। इसलिए प्रेमचंद आज भी हमारे लिए प्रासंगिक हैं।

संदर्भग्रंथ सूची

१. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दसवाँ संस्करण: २०१८, पृष्ठ संख्या— ०३
२. वही, पृष्ठ संख्या— १३
३. वही, पृष्ठ संख्या— १७
४. हंसराज रहबर द्वारा प्रेमचंद: जीवन और कृतित्व से उद्धृत
५. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दसवाँ संस्करण:२०१८, पृष्ठ संख्या— १२३
६. वही
७. वही
८. वही, पृष्ठ संख्या— १२६
९. वही, पृष्ठ संख्या— १२९
१०. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन, नवम संस्करण: २०१८, पृष्ठ संख्या —२७
११. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दसवाँ संस्करण: २०१८, पृष्ठ संख्या— १३१
१२. प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस, पृष्ठ संख्या — ६७
१३. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दसवाँ संस्करण:२०१८, पृष्ठ संख्या— १७६
१४. वहीं, १३६

❑❑❑

Vidyawarta®
Peer Reviewed International Refereed Research Journal
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed Pin-431126 (Maharashtra)

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. CERTIFIED ISO 9001:2015 COMPANY International Multilingual Research Journal

Certificate Of Publication

This is to certify that the review board of our research journal accepted the research paper/article titled PREMCHAND KI YUGCHETNA ______ of Dr./Mr./Miss/Mrs. KHUSHBOO SINGH

It is peer reviewed and published in the Issue 58 Vol. 13 in the month of APRIL TO JUNE 2026.

Thank you for sending your valuable writing for Vidyawarta Journal

Indexed (IIJIF)

Impact Factor 9.51

Govt.of India, Trade Marks Registry Regd.No.2611690

ISSN-2319 9318

Editor in chief
Dr.Bapu G.Gholap